Pro

Chapter 30

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1										
	דִּבְרֵ֤י׀	אָג֥וּר	בִּן־	יָקֶ֗ה	הַמַּ֫שָּׂ֥א	נְאֻ֣ם	הַ֭גֶּבֶר	לְאִ֣יתִיאֵ֑ל	לְאִֽיתִיאֵ֗ל	וְאֻכָֽל׃
	वचन	आगूर	पुत्र-	याकेह-का	भारी-वचन	कथन	पुरुष-का	इतीएल-को	इतीएल-को	और-उक्काल।
	H1697	H0094		H3348		H5002	H1397	H0384	H0384	H0401

ये सूक्ति आगूर की हैं, जो याके क पूत्र था। यह पुरुष ईतीएल और उक्काल से: कहता है

2								
	כִּ֤י	בַ֣עַר	אָנֹכִ֣י	מֵ֑אִישׁ	וְלֹֽא־	בִינַ֖ת	אָדָ֣ם	לִֽי׃
	क्योंकि	पशु-सा	मैं	मनुष्य-से	और-नहीं-	समझ	मनुष्य-की	मुझे।
		H1198	H0595	H0376	H3808	H0998	H0120	

मैं महाबुद्धिहीन हूँ। मुझमें मनुष्य की समझदारी बिल्कुल नहीं है।

3						
	וְלֹא־	לָמַ֥דְתִּי	חָכְמָ֑ה	וְדַ֖עַת	קְדֹשִׁ֣ים	אֵדָֽע׃
	और-नहीं-	सीखी	बुद्धि	और-ज्ञान	पवित्रों-का	जानता।
	H3808	H3925	H2451	H1847	H6918	H3045

मैंने बुद्धि नहीं पायी और मेरे पास उस पवित्र का ज्ञान नहीं है।

4										
	מִ֤י	עָלָֽה־	שָׁמַ֨יִם׀	וַיֵּרַ֗ד	מִ֤י	אָֽסַף־	ר֨וּחַ׀	בְּחָפְנָ֗יו	מִ֤י	צָֽרַר־
	कौन	चढ़ा-	स्वर्ग	और-उतरा?	कौन	इकट्ठी-की-	वायु	मुट्ठियों-में-अपनी?	कौन	बाँधे-
	H4310	H5927	H8064	H3381	H4310	H0622	H7307	H2651	H4310	
	מַ֨יִם׀	בַּשִּׂמְלָ֗ה	מִ֭י	הֵקִ֣ים	כָּל־	אַפְסֵי־	אָ֑רֶץ	מַה־	שְּׁמ֥וֹ	וּמַה־
	जल	वस्त्र-में?	कौन	स्थापित-किए	सब-	छोरों-	पृथ्वी-के?	क्या-	नाम-उसका	और-क्या-
	H4325	H8071	H4310		H3605		H0776	H4100	H8034	H4100
	שֶּׁם־	בְּ֝נ֗וֹ	כִּ֣י	תֵדָֽע׃						
	नाम-	बेटे-उसके	कि	तू-जानता?						
	H8034			H3045						

स्वर्ग से कोई नहीं आया और वहाँ के रहस्य ला सका पवन को मुट्ठी में कोई नहीं बाँध सका। कोई नहीं बाँध सका पानी को कपड़े में और कोई नहीं जान सका धरती का छोर। और यदि कोई इन बातों को कर सका है, तो मुझसे कहो, उसका नाम और उसके पुत्र का नाम मुझको बता, यदि तू उसको जानता हो।

5								
	כָּל־	אִמְרַ֣ת	אֱל֣וֹהַּ	צְרוּפָ֑ה	מָגֵ֥ן	ה֝֗וּא	לַֽחֹסִ֥ים	בּֽוֹ׃
	सब-	वचन	एलोहा-का	शुद्ध	ढाल	वह	शरण-लेने-वालों-के-लिए	उस-में।
	H3605		H0433	H6884	H4043	H1931	H2620	

वचन परमेश्वर का दोष रहित होता है, जो उसकी शरण में जाते हैं वह उनकी ढाल होता है।

6									
	אַל־	תּ֥וֹסְףְּ	עַל־	דְּבָרָ֑יו	פֶּן־	יוֹכִ֖יחַ	בְ֣ךָ	וְנִכְזָֽבְתָּ׃	פ
	मत-	जोड़	पर-	वचनों-उसके	कहीं-	वह-डाँटे	तुझे	और-झूठा-ठहरे।	—
	H0408	H3254		H1697	H6435	H3198		H3576	

तू उसके वचनों में कुछ घट—बढ़ मत कर। नहीं तो वह तुझे डांटे फटकारेगा और झूठा ठहराएगा।

7								
	שְׁ֭תַּיִם	שָׁאַ֣לְתִּי	מֵאִתָּ֑ךְ	אַל־	תִּמְנַ֥ע	מִ֝מֶּ֗נִּי	בְּטֶ֣רֶם	אָמֽוּת׃
	दो	माँगीं	तुझ-से	मत-	रोक	मुझ-से	पहले-कि-	मरूँ।
	H8147	H7592	H0854	H0408	H4513		H2962	H4191

हे यहोवा, मैं तुझसे दो बातें माँगता हूँ: जब तक मैं जीऊँ, तू मुझको देता रह।

8

שָׁוְא׀	व्यर्थता	H7723
וּדְבַר־	और-वचन-	H1697
כָּזָב	झूठ-का	H3577
הַרְחֵק	दूर-रख	H7368
מִמֶּנִּי	मुझ-से	
רֵאשׁ	गरीबी	
וָעֹשֶׁר	और-धन	H6239
אַל־	मत-	H0408
תִּתֶּן־	दे-	H5414
לִי	मुझे	
הַטְרִיפֵנִי	खिला-मुझे	H2963
לֶחֶם	रोटी	H3899
חֻקִּי׃	मेरा-भाग।	H2706

तू मुझसे मिथ्या को, व्यर्थ को दूर रख। मुझे दरिद्र मत कर और न ही मुझको धनी बना। मुझको बस प्रतिदिन खाने को देता रह।

9

פֶּן	कहीं-	H6435
אֶשְׂבַּע׀	तृप्त-होकर	H7646
וְכִחַשְׁתִּי	और-इनकार-करूँ	H3584
וְאָמַרְתִּי	और-कहूँ	H0559
מִי	कौन	H4310
יְהוָה	यहोवा?	H3068
וּפֶן־	और-कहीं-	H6435
אִוָּרֵשׁ	गरीब-होकर	H3423
וְגָנַבְתִּי	और-चुराऊँ	H1589
וְתָפַשְׂתִּי	और-पकड़ूँ	H8610
שֵׁם	नाम	H8034
אֱלֹהָי׃	एलोहीम-मेरे-का।	H0430
פ	—	

कहीं ऐसा न हो जाये बहुत कुछ पा करके मैं तुझको त्याग दूँ; और कहने लगूँ "कौन परमेश्वर है" और यदि निर्धन बनूँ और चोरी करूँ, और इस प्रकार मैं अपने परमेश्वर के नाम को लजाऊँ।

10

אַל־	मत-	H0408
תַּלְשֵׁן	निन्दा-कर	H3960
עֶבֶד	दास-की	H5650
אֶל־	पास-	H0413
[אדנו]	[स्वामी-उसके]	H0113
(אֲדֹנָיו)	(स्वामी-उसके)	H0113
פֶּן־	कहीं-	H6435
יְקַלֶּלְךָ	वह-शाप-दे-तुझे	H7043
וְאָשָׁמְתָּ׃	और-दोषी-ठहरे।	H0816

तू स्वामी से सेवक की निन्दा मत कर नहीं तो तुझको, वह अभिशाप देगा और तुझे उसकी भरपाई करनी होगी।

11

דּוֹר	पीढ़ी	H1755
אָבִיו	पिता-अपने	H0001
יְקַלֵּל	शाप-देती	H7043
וְאֶת־	और-को-	H0853
אִמּוֹ	माता-अपनी	H0517
לֹא	नहीं	H3808
יְבָרֵךְ׃	आशीर्वाद-देती।	H1288

ऐसे भी होते हैं जो अपने पिता को कोसते है, और अपनी माता को धन्य नहीं कहते हैं।

12

דּוֹר	पीढ़ी	H1755
טָהוֹר	शुद्ध	H2889
בְּעֵינָיו	अपनी-नज़रों-में	
וּמִצֹּאָתוֹ	और-मल-अपने-से	H6675
לֹא	नहीं	H3808
רֻחָץ׃	धोयी।	H7364

होते हैं ऐसे भी, जो अपनी आँखों में तो पवित्र बने रहते किन्तु अपवित्रता से अपनी नहीं धुले होते हैं।

13

דּוֹר	पीढ़ी	H1755
מָה־	कैसी-	H4100
רָמוּ	ऊँची	
עֵינָיו	आँखें-उसकी	
וְעַפְעַפָּיו	और-पलकें-उसकी	H6079
יִנָּשֵׂאוּ׃	उठाई-जातीं।	H5375

ऐसे भी होते हैं जिनकी आँखें सदा तनी ही रहती, और जिनकी आँखों में घृणा भरी रहती है।

14

דּוֹר׀	पीढ़ी	H1755
חֲרָבוֹת	तलवारें	H2719
שִׁנָּיו	दाँत-उसके	H8127
וּמַאֲכָלוֹת	और-छुरी	H3979
מְתַלְּעֹתָיו	दाढ़ें-उसके	H4973
לֶאֱכֹל	खाने-के-लिए	H0398
עֲנִיִּים	गरीबों-को	H6041
מֵאֶרֶץ	पृथ्वी-से	H0776
וְאֶבְיוֹנִים	और-दीनों-को	H0034
מֵאָדָם׃	मनुष्यों-से।	H0120
פ	—	

ऐसे भी होते हैं जिनके दाँत कटार हैं और जिनके जबड़ों में खंजर जड़े रहते हैं जिससे वे इस धरती के गरीबों को हड़प जायें, और जो मानवों में से अभावग्रस्त हैं उनको वे निगल लें।

15
לַֽעֲלוּקָ֨ה जोंक-के H5936
שְׁתֵּ֪י दो H8147
בָנ֡וֹת बेटियाँ H1323
הַ֤ב ׀ दे H3051
הַ֗ב दे। H3051
שָׁל֣וֹשׁ तीन H7969
הֵ֭נָּה ये H2007
לֹ֣א नहीं H3808
תִשְׂבַּ֑עְנָה तृप्त-होतीं H7646
אַ֝רְבַּ֗ע चार H0702
לֹא־ नहीं- H3808
אָ֥מְרוּ कहतीं H0559
הֽוֹן׃ बहुत। H1952

जोंक की दो पुत्र होती हैं वे सदा चिल्लाती रहती, “देओ, देओ।” तीन वस्तु ऐसी हैं जो तृप्त कभी न होती और चार ऐसी जो कभी बस नहीं कहती।

16
שְׁא֗וֹל शेओल H7585
וְעֹ֥צֶר और-बंद H6115
רָ֑חַם गर्भ
אֶ֭רֶץ पृथ्वी H0776
לֹא־ नहीं- H3808
שָׂ֣בְעָה तृप्त H7646
מַּ֑יִם जल-से H4325
וְ֝אֵ֗שׁ और-आग H0784
לֹא־ नहीं- H3808
אָ֥מְרָה कहती H0559
הֽוֹן׃ बहुत। H1952

कब्र, बांझ—कोख और धरती जो जल से कभी तृप्त नहीं होती और अग्नि जो कभी बस नहीं कहती।

17
עַ֤יִן ׀ आँख
תִּֽלְעַ֣ג ठट्ठा-करती H3932
לְאָב֮ पिता-पर H0001
וְתָב֪וּז और-तुच्छ-करती H0936
לִֽיקֲּהַ֫ת־ आज्ञा- H3349
אֵ֥ם माता-की H0517
יִקְּר֣וּהָ नोचेंगे-उसे H5365
עֹרְבֵי־ कौवे- H6158
נַ֑חַל नाले-के
וְיֹאכְל֥וּהָ और-खाएंगे-उसे H0398
בְנֵי־ बच्चे-
נָֽשֶׁר׃ गिद्ध-के। H5404
פ —

जो आँख अपने ही पिता पर हँसती है, और माँ की बात मानने से घृणा करती है, घाटी के कौवे उसे नोंच लेंगे और उसको गिद्ध खा जायेंगे।

18
שְׁלֹשָׁ֣ה तीन H7969
הֵ֭מָּה ये H1992
נִפְלְא֣וּ आश्चर्यजनक H6381
מִמֶּ֑נִּי मुझ-से
[וארבע] [और-चार] H0702
(וְ֝אַרְבָּעָ֗ה) (और-चार) H0702
לֹ֣א नहीं H3808
יְדַעְתִּֽים׃ जानता-मैं। H3045

तीन बातें ऐसी हैं जो मुझे अति विचित्र लगती, और चौथी ऐसी जिसे में समझ नहीं पाता।

19
דֶּ֤רֶךְ मार्ग H1870
הַנֶּ֨שֶׁר ׀ गिद्ध-का H5404
בַּשָּׁמַ֗יִם आकाश-में H8064
דֶּ֥רֶךְ मार्ग H1870
נָחָ֗שׁ साँप-का H5175
עֲלֵ֫י־ पर-
צ֥וּר चट्टान H6697
דֶּֽרֶךְ־ मार्ग- H1870
אֳנִיָּ֥ה जहाज़-का H0591
בְלֶב־ बीच-में-
יָ֑ם समुद्र H3220
וְדֶ֖רֶךְ और-मार्ग H1870
גֶּ֣בֶר पुरुष-का H1397
בְּעַלְמָֽה׃ कुंवारी-में। H5959

आकाश में उड़ते हुए गरूड़ का मार्ग, और लीक नाग की जो चट्टान पर चला; और महासागर पर चलते जहाज़ की राह और उस पुरुष का मार्ग जो किसी कामिनी के प्रेम में बंधा हो।

20
כֵּ֤ן ׀ वैसा
דֶּ֥רֶךְ मार्ग H1870
אִשָּׁ֗ה स्त्री H0802
מְנָ֫אָ֥פֶת व्यभिचारिणी-का H5003
אָ֭כְלָה खाती H0398
וּמָ֣חֲתָה और-पोंछती
פִ֑יהָ मुँह-अपना H6310
וְ֝אָמְרָ֗ה और-कहती H0559
לֹֽא־ नहीं- H3808
פָעַ֥לְתִּי किया H6466
אָֽוֶן׃ अधर्म। H0205
פ —

चरित्रहीन स्त्री की ऐसी गति होती है, वह खाती रहती और अपना मुख पोंछ लेती और कहा करती है, मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया।

21
תַּ֣חַת नीचे- H8478
שָׁ֭לוֹשׁ तीन H7969
רָ֣גְזָה काँपती H7264
אֶ֑רֶץ पृथ्वी H0776
וְתַ֥חַת और-नीचे- H8478
אַ֝רְבַּ֗ע चार H0702
לֹא־ नहीं- H3808
תוּכַ֥ל सकती H3201
שְׂאֵֽת׃ सहना। H5375

तीन बातें ऐसी हैं जिनसे धरा काँपती है और एक चौथी है जिसे वह सह नहीं कर पाती।

22
תַּֽחַת־ नीचे- H8478
עֶ֭בֶד दास H5650
כִּ֣י जब-
יִמְל֑וֹךְ राजा-होता
וְ֝נָבָ֗ל और-मूर्ख H5036
כִּ֣י जब-
יִֽשְׂבַּֽע־ तृप्त-होता- H7646
לָֽחֶם׃ रोटी-से। H3899

दास जो बन जाता राजा, मूर्ख जो सम्पन्न,

23									
	תַּחַת	שְׂנוּאָה	כִּי	תִבָּעֵל	וְשִׁפְחָה	כִּי־	תִירַשׁ	גְּבִרְתָּהּ׃	פ
	नीचे-	घृणिता	जब-	ब्याही-जाती	और-दासी	जब-	विरासत-में-लेती	मालकिन-अपनी।	—
	H8478	H8130		H1166	H8198		H3423	H1404	

ब्याह किसी ऐसी से जिससे प्रेम नहीं हो; और ऐसी दासी जो स्वामिनी का स्थान ले ले।

24							
	אַרְבָּעָה	הֵם	קְטַנֵּי־	אָרֶץ	וְהֵמָּה	חֲכָמִים	מְחֻכָּמִים׃
	चार	ये	छोटे-	पृथ्वी-के	और-ये	बुद्धिमान	बुद्धि-से-भरे।
	H0702	H1992		H0776	H1992	H2450	H2449

चार जीव धरती के, जो यद्यपि बहुत क्षुद्र हैं किन्तु उनमें अत्याधिक विवेक भरा हुआ है।

25							
	הַנְּמָלִים	עַם	לֹא־	עָז	וַיָּכִינוּ	בַקַּיִץ	לַחְמָם׃
	चींटियाँ	प्रजा	नहीं-	शक्तिशाली	और-तैयार-करतीं	गर्मी-में	भोजन-अपना।
	H5244		H3808	H5794		H7019	H3899

चीटियाँ जिनमें शक्ति नहीं होती है फिर भी वे गर्मी में अपना खाना बटोरती हैं;

26							
	שְׁפַנִּים	עַם	לֹא־	עָצוּם	וַיָּשִׂימוּ	בַסֶּלַע	בֵּיתָם׃
	शाफान	प्रजा	नहीं-	शक्तिशाली	और-बनातीं	चट्टान-में	घर-अपना।
			H3808	H6099		H5553	

बिज्जू दुर्बल प्राणी हैं फिर भी वे खड़ी चट्टानों में घर बनाते;

27						
	מֶלֶךְ	אֵין	לָאַרְבֶּה	וַיֵּצֵא	חֹצֵץ	כֻּלּוֹ׃
	राजा	नहीं	टिड्डियों-का	और-निकलतीं	पंक्ति-में	सब।
	H4428	H0369	H0697	H3318		H3605

टिड्डियों का कोई भी राजा नहीं होता है फिर भी वे पंक्ति बाँध कर एक साथ आगे बढ़ती हैं।

28							
	שְׂמָמִית	בְּיָדַיִם	תְּתַפֵּשׂ	וְהִיא	בְּהֵיכְלֵי	מֶלֶךְ׃	פ
	छिपकली	हाथों-से	पकड़ी-जाती	और-वह	महलों-में	राजा-के।	—
	H8079	H3027	H8610	H1931	H1964	H4428	

और वह छिपकली जो बस केवल हाथ से ही पकड़ी जा सकती है, फिर भी वह राजा के महलों में पायी जाती।

29							
	שְׁלֹשָׁה	הֵמָּה	מֵיטִיבֵי	צָעַד	וְאַרְבָּעָה	מֵיטִבֵי	לָכֶת׃
	तीन	ये	अच्छे-चलने-वाले	कदम	और-चार	अच्छे-चलने-वाले	चाल।
	H7969	H1992	H3190	H6806	H0702	H3190	H3212

तीन प्राणी ऐसे हैं जो लगते महत्वपूर्ण जब वे चलते हैं, दरअसल वे चार हैं:

30							
	לַיִשׁ	גִּבּוֹר	בַּבְּהֵמָה	וְלֹא־	יָשׁוּב	מִפְּנֵי־	כֹל׃
	सिंह	वीर	पशुओं-में	और-नहीं-	पीछे-हटता	सामने-से-	किसी-के।
	H3918	H1368	H0929	H3808	H7725	H6440	H3605

एक सिंह, जो सभी पशुओं में शक्तिशाली होता है, जो कभी किसी से नहीं डरता;

31							
	זַרְזִיר	מָתְנַיִם	אוֹ־	תַיִשׁ	וּמֶלֶךְ	אַלְקוּם	עִמּוֹ׃
	मुर्गा	कमर-का	या-	बकरा	और-राजा	अजेय	अपनी-सेना-के-साथ।
	H2223	H4975		H8495	H4428	H0510	

गर्वीली चाल से चलता हुआ मुर्गा और एक बकरा और वह राजा जो अपनी सेना के मध्य है।

32							
	אִם־	נָבַלְתָּ	בְהִתְנַשֵּׂא	וְאִם־	זַמּוֹתָ	יָד	לְפֶה׃
	यदि-	मूर्खता-की	घमण्ड-करने-में	और-यदि-	सोची	हाथ	मुँह-पर।
			H5375		H2161	H3027	H6310

तूने यदि कभी कोई मूर्खता का आचरण किया हो, और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बना हो अथवा तूने कभी कुचक्र रचा हो तो तू अपना मुँह अपने हाथों से ढक ले।

33

כִּ֤י	מִ֪יץ	חָלָ֡ב	י֘וֹצִ֤יא	חֶמְאָ֗ה	וּמִֽיץ־	אַ֭ף	י֣וֹצִיא	דָ֑ם	וּמִ֥יץ	אַ֝פַּ֗יִם
क्योंकि	मथना	दूध-का	निकालता	मखखन	और-मथना-	नाक-का	निकालता	लहू	और-मथना	क्रोध-का
	H4330	H2461	H3318		H4330	H0639	H3318	H1818	H4330	H0639

י֣וֹצִיא	רִֽיב׃	פ
निकालता	झगड़ा।	—
H3318	H7379	

> जैसे मथने से दूध मक्खन निकालता है और नाक मरोड़ने से लहू निकल आता है वैसे ही क्रोध जगाना झगड़ों का भड़काना होता है।